2015

AUG-SEP

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

(Bi-Monthly)

Peer-Reviewed Journal

Impact factor: 2.125

VOL-IV Issues: V

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues V
AUGUST-SEP 2015 ISSN 2278-5655

हिन्दी भाषा एवं मूल्य शिक्षा

शोधकर्त्री
स्वाती पारीक
शिक्षा विभाग, राजस्थान
विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश – *प्रस्तुत लेख में भाषा एवं उसके मूल्यों से सम्बन्ध को उजागर करने का प्रयास किया गया है। भारत में शिक्षा के समक्ष सबसे बडी चुनौती है, हमारे सहभागिता आधाारित लोकतंत्र एवं संविधान में प्रतिस्थापित मूल्यों को सुदृढ़ करना । शिक्षा में गुणवत्ता सम्बन्धी सरोकार शामिल हैं। भाषा शिक्षण का प्रमुख ध्येय मूल्यों एवं विश्वशान्ति को पोषित करना रहा है। हिन्दी हमारी मातृ भाषा है और इसमें हमारी संस्कृति एवं मूल्यों को पोषित करने वाले तत्वों का समावेश है।*

भारत एक लोकतांत्रिक स्वतंत्र राष्ट्र है जिसका इतिहास समृद्ध है तथा वैविध्य से परिपूर्ण है। यहां शिक्षा के समक्ष सबसे बडी चुनौती है, हमारे सहभागिता – आधारित लोकतंत्र एवं संविधान में प्रतिस्थापित मूल्यों को सुदृढ़ करना। इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने के लिये शिक्षा का शांति एवं सद्भावपूर्ण सह–अस्तित्व से संबंधित मूल्यों की ओर अभिमुखीकरण होना चाहिये। शिक्षा में गुणवत्ता सम्बन्धी सरोकार शामिल है। यही वजह है कि वर्तमान में शांति के लिये चिन्ता, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के प्रति झुकाव को मात्र मूल्यों की तरह नहीं बल्कि गुणवत्ता के मूलभूत तत्वों की तरह ही देखा जा रहा है। शांति की संस्कृति का निर्माण करना शिक्षा का निर्विवाद उद्देश्य है। शिक्षा सार्थक तभी हो सकती है जब वह व्यक्ति को इतना समर्थ बनाए कि वह शांति को जीवन शैली के रुप में चुन सके और संघर्ष को सुलझाने की क्षमता रखे न कि केवल संघर्ष का एक निष्क्रिय दर्शक बने।

शिक्षा को उन मूल्यों को प्रसारित करने में सक्षम होना चाहिये जो शांति, मानवता और सांस्कृतिक विविधता वाले समाज में सहिष्णुता को पोषित करे। शिक्षा कोई भौतिक वस्तु नहीं है। उर्वर और उर्जादायी शिक्षा की जड़ें हमेशा सांस्कृतिक जमीन में गहरे पैठी होती है। शिक्षा का उद्देश्य कारण और समझ पर आधारित लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व अधिकार तथा दूसरों के प्रति आदर जैसे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का निर्माण करना होना चाहिये।

शिक्षा के लक्ष्य समाज की मौजूदा महत्वाकांक्षाओं व जरुरतों के साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तात्कालिक सरोकारों सहित वृहद मानवीय आदर्शो को भी प्रतिबिंबित करते हैं। किसी भी खास समय और स्थान के संदर्भ में इन्हें व्यापक और शाश्वत मानवीय आकांक्षाओं की समकालीन और प्रासंगिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है।

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा 2005)

शिक्षा का अर्थ बालक के शरीर, मन, और आत्मा के सर्वांगीण विकास से है। इसमें नैतिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास प्रमुख है। नैतिकता एवं सिद्धांतो के अभाव में कोई भी विद्यार्थी स्व नियंत्रण एवं उच्च चरित्र को प्राप्त नहीं कर सकता । प्रत्येक शैक्षिक व्यवस्था नैतिकता एवं सिद्धांतो के अभाव में अपूर्ण है। सभी शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे अपने विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास करने हेतु प्रयासरत रहें, यदि कोई भी शिक्षक ऐसा करने में सफल नहीं है तो वह सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति उदासीन माना जायेगा। शिक्षा ही व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास का आधार है। विद्यार्थियों को मूल्यों का पाठ पढ़ाने के लिये सर्वप्रथम एक शिक्षक को स्वयं उच्च आदर्शो के अनुसार जीवन जीना चाहिए ।

(महात्मा गांधी)

शिक्षा सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक बदलाव लाने का उपकरण है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता के लिये शिक्षा का सही उपयोग किया जाना आवश्यक है। शिक्षा एक भौतिक साधन नहीं है अपितु यह शाश्वत जीवन मूल्यों को प्राप्त करने का उपाय है ।

(डा0 राधाकृष्णन)

शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोण और आदर्शो के पोषण पर बल देती है जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बैठाने के लिये आवश्यक है। इसमें मानव अधिकार, न्याय ,सहिष्णुता, सहकार, सामाजिक दायित्व, सांस्कृति विविधता का सम्मान सम्मिलित है। नैतिक विकास के माध्यम से विधार्थी यह सीखते हैं कि सही क्या है, दया क्या है और व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में साझे हित में क्या उचित है। मूल्यों की शिक्षा का मतलब सदैव से ही वांछनीय व्यवहार को प्रेरित करना रहा है। स्कूली पाठ्यचर्या के चार सुपरिचित क्षेत्र है – भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान। भाषा की शिक्षा कुछ अनूठे अवसर उपलब्ध कराती है। कहानी, कविता, गीतों और नाटकों के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुडते हैं। इससे उनको दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते है और उनके सामाजिक मूल्यों को परिप्रेक्ष्य प्राप्त होता है। स्कूल का पहला सरोकार बच्चे की भाषा सम्बन्धी क्षमता के मुद्दे से सम्बंधित रहा है। विद्यालयी नियमों के द्वारा नैतिक मूल्यों की स्थापना पर सदैव से बल दिया जा रहा है। इस हेतु पाठ्क्रम का विकास समाज, चरित्र–निर्माण तथा स्व–विकास को ध्यान में रखते हुये करने के निर्देश है।

(राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का दस वर्षीय कार्यक्रम 1975)

भाषा विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन है। यह विद्यार्थी को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोडने में पुल का काम करती है।

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा 2005)

भाषा का मूल्यों एवं संस्कृति के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। भाषा का प्रयोग संस्कृति के स्थानान्तरण हेतु अनिवार्य है। भाषा ही मूल्यों एवं सांस्कृतिक कारकों की वाहक है। यही वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज में विभिन्न व्यक्तियों एवं उनकी सांस्कृतिक समझ को स्थापित किया जाता है। भाषा शिक्षण का प्रमुख ध्येय मूल्यों एवं विश्वशांति को पोषित करना रहा है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है अतः विद्यार्थी प्रतिदिन संप्रेषण एवं विषय दोनों ही रुपों में इससे घनिष्ठ रुप से जुडे रहते हैं। यह मात्र एक विद्यालयी विषय नहीं है अपितु हमारी

संस्कृति एवं विरासत का अभिन्न अंग है। इसमे हमारी संस्कृति और मूल्यों को पोषित करने वाले तत्वों का समावेश है। इन्हीं तत्वों के द्वारा समाज का नियमन होता है और सांस्कृतिक विविधताओं का आगामी पीढीयों तक हस्तान्तरण होता है। यह तथ्य सर्वविदित है कि जन्म के समय सभी बालक एक समान ही होते है जब तक कि उनका परिचय उनकी भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधताओं से नहीं किया जाता है। इसी उद्‌देश्य की पूर्ती हेतु भाषा शिक्षण को एक विद्यालयी विषय के रुप में स्थान दिया गया है। हिन्दी भाषा की पाठ्‌यपुस्तकों में प्रारम्भ से ही भारतीय सांस्कृतिक, विरासत एवं संविधान को पोषित करने वाले मूल्यों को स्थान दिया गया है। हिन्दी शिक्षण की पाठ्‌यपुस्तकों हेतु पाठ्‌यक्रम का निर्माण समाज, चरित्र –निर्माण तथा स्व–विकास जैसे कारकों के आधार पर किया जाता है। भाषा शिक्षण के अन्तर्गत पठन, पाठन तथा श्रवण तीनों से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाता है। इससे वे अपनी संस्कृति एवं उसके मूल्यों से भावानात्क रुप से जुड़ते जाते हैं। राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या रुपरेखा 2005 में यह भी स्पष्ट किया गया है कि प्राथमिक स्तर पर तो मातृभाषा ही अनिवार्य रुप से शिक्षण का माध्यम हो चूंकि इसकी पृष्ठभूमि विद्यार्थियों को आत्मीयता प्रदान करती है। अपनी भाषा में लिखित कहानियाँ, कविताएँ, तथा नाटक विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोडने के पुल का काम करते हैं। ये विद्यार्थियों को अपने अनुभवों से समझने और दूसरों के प्रति संवेदनशील बनने के अवसर भी प्रदान करते है। प्राथमिक स्तर पर नैतिकता की शिक्षा प्रदान करने हेतु रोचक कथाओं एवं विभिन्न धार्मिक कथाओं से अच्छा माध्यम और कुछ भी नहीं हो सकता है। विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण मूल्य शिक्षा द्वारा ही संभव है अतः मातृभाषा को उपयुक्त स्थान पर रखना आज की महत्ती आवश्यकता है। मातृभाषा ही मूल्यों की वाहक है और यही मूल्य, विद्यार्थियों को भविष्य में उत्कर्ष की ओर ले जा सकते हैं।

References

- National curriculum Framework (2005). New Delhi: National council of Educational Research and Training.

- National policy on Education (1986) retrieved from www.ncert.nic.in
- Position Papers – National Council of Educational Research and Training retrieved from www.ncert.nic.in
- CBSE-Values Education, A Handbook for Teachers retrieved from cbse academic . in
- Fifth survey of Research in Education (1988- 1992) . Vol.1-1.New Delhi : NCERT